अटल की मौत पर खास रिपोर्ट

अटल क्या 15 अगस्त को ही मर गए थे...

अमित शाह एंड कंपनी ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री की मौत को इवेंट में बदला

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली : क्या पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की मौत 15 अगस्त को सुबह पौने दस बजे हुई थी...यह सवाल उनके अंतिम संस्कार के बाद लोगों ने सोशल मीडिया पर उठाया है। जिस तरह से मोदी सरकार ने अटल की मौत को भुनाने की नाकाम कोशिश की है, उसने लोगों के शक को बढ़ाया है। दरअसल, अटल की मौत एक इवेंट बना दी गई...

यह सारा शक अचानक पैदा नहीं हुआ। दरअसल, 16 अगस्त की दो तस्वीरें सामने आईं तो लोग सवाल करने लगे। 11 जून से ही अटल की तबियत बेहद खराब थी। उस समय जब उनको एम्स लाया गया था तभी डॉक्टरों ने कह दिया था कि अब ये चंद दिन के मेहमान हैं। अटल की तबियत 14 अगस्त को एकदम से खराब हो गई। लेकिन अटल को देखने वाली मेडिकल टीम को पहले से ही निर्देश था कि अटल के बारे में कोई भी सूचना सबसे पहले पीएमओ यानी प्रधानमंत्री कार्यालय को बताई जाए, फिर उसके बाद ही वहां के निर्देश के बाद सार्वजनिक की जाए।

कयास यह लगाए जा रहे हैं कि 15 अगस्त की सुबह पौने दस बजे अटल ने अंतिम सांस ली लेकिन चूंकि उस दिन प्रधानमंत्री के मौजूदा कार्यकाल का लालकिले की प्राचीर से आखिरी भाषण था, इसलिए अटल की मौत की खबर बाहर जाने से रोकने का फैसला लिया गया। ताकि पीएम मोदी के भाषण को अखबारों और टीवी में पूरी तवज्जो मिले। अगर अटल की मौत की खबर 15 अगस्त को आती तो मीडिया उस दिन मोदी के भाषण को कोई भाव नहीं देता।

यह शक तब बढ़ा जब 16 अगस्त को अटल की बीमारी को लेकर बड़े इवेंट की तैयारी होने लगी। सारे मंत्रियों से कहा गया कि वे एक-एक कर अटल का हालचाल लेने के बहाने से दिनभर एम्स में जाते रहें ताकि मीडिया की नजर उधर जाए। फिर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह भी देखने आए। आप को बता दें कि इससे पहले अटल जब एम्स में या कहीं और भर्ती हुए तो अमित शाह उनको देखने नहीं गए।

16 अगस्त को दो फोटो सामने आई, जिसमें एक में मोदी मुस्कुराते हुए डॉक्टरों से कुछ बात कर रहे हैं। सामने अटल मृत्यु शैय्या पर पड़े हैं। दूसरी फोटो जो आई उसमें अटल का चेहरा पूरी तरह काला पड़ा हुआ था, मानो चेहरे पर कोई लेप लगाकर रखा गया हो। ऐसा तभी होता है जब किसी इंसान की मौत होने के बाद उसके शरीर को 24 घंटे के लिए यथावत रखा जाए। शव खराब न हो इसलिए तमाम तरह के केमिकल लगाए जाते हैं। इन दोनों फोटो को जिसने भी देखा, वह हैरान रह गया। उसके शक की सुई चल पड़ी।

सरकारी भोंपू दूरदर्शन ने दोपहर में डेढ़ बजे के करीब अटल के निधन की खबर पूरी दुनिया को बता दी। पीएमओ से डांट पड़ी तो कुछ ही देर में दूरदर्शन ने माफी मांगकर वह खबर हटा ली। इसके बाद भाजपा के सबसे चहेते दलाल टीवी मालिक रजत शर्मा के इंडिया टीवी न्यूज चैनल पर दोपहर ढाई बजे अटल के निधन की खबर चला दी गई। लेकिन कुछ देर बाद वहां से भी खबर हटा दी गई।

एम्स में जहां अटल भर्ती थे, वहां मीडिया के जाने पर पाबंदी थी। किसी भी चैनल के पास अटल के बिस्तर के आसपास का फुटेज शाम तक नहीं था। सारे चैनल या तो वहां नेताओं को आते-

जाते दिखा रहे थे या फिर अटल की उबासी वाली कविताएं सुनाकर लोगों को बोर कर रहे थे।

कुछ तटस्थ पत्रकारों ने अटल की मौत के दौरान हालात का विश्लेषण किया है...आइए जानते हैं...

-मोदी के लालकिले पर दिए गए 15 अगस्त पर उनका भाषण व घोषणाएं कमजोर पड़ जाएंगी। लोगों का ध्यान वाजपेयी पर चला जाएगा।

-??- इसलिए मृत शरीर को उसे वेंटीलेटर पर रखा गया। डॉक्टर जो इलाज में लगा था उसे घर जाने और किसी से बात करने पर पाबंदी लगा दी गयी। पूरे अस्पताल परिसर को छावनी में तब्दील कर दिया गया अन्यथा बीमार तो वह काफी समय से थे भर्ती भी वे काफी समय से थे फिर ऐसा क्या हुआ जो 2 दिन पहले इस तरह का ड्रामेटिक बदलाव किया गया??

-??-जब 15 अगस्त के भाषण मीडिया में छप गया । टीवी पर चल गया। भक्तों द्वारा कसीदे पढ़ लिए गए चाटुकार टीवी और मीडिया द्वारा तलवे चाट लिए गए इस बीच गंभीर स्थिति का हवाला देकर लोगों का भ्रम बनाए रखा।

-जब फेसबुक/ट्विटर पर भाषण के झूठ पकड़े जाने लगे तब लगा कि अब मर जाने की घोषणा करवा ही दो ताकि लोगों का ध्यान झूठ से हटकर मृत्यु पर चला जाए।

-इस बीच इन 2 दिनों में लोगों की भावनाओं को , सम्वेदनाओं को दुख की भट्टी में अच्छे से भूना और पकाया गया और मृत्यु की घोषणा के साथ ही उसे लोगों को परोस दिया गया।

-देह का गिंजन करवा दिया। "बताना नहीं वरना टांग तोड़ दूंगा" इस कहावत को चरितार्थ किया मोदी ने उसने भले ही अटल की मौत को 2 दिन के लिए छुपाया लेकिन अटल की खाल पर लगे केमिकल ने उनकी त्वचा के रंग को काला कर दिया और चुगली कर दी चौकीदार की।

-बदला तो लेना ही था ....जीते जी ना सही मौत के बाद ही सही... मरने पर 2 दिन तक देह का गिंजन कर के।

-मुँह से पाइप ठूंस कर कलेजा में जबरन ऑक्सीजन भर कर लोंगो को बताता रहा कि अभी जिंदा है।

-वैसे ये भी विडंबना ही है कि जहां ऑक्सीजन की जरूरत होती है (गोरखपुर) वहां मिलती नहीं और जहां जरूरत नहीं है वहां जबरन ठूंसी जाती है।

??--अ -अटल के चेहरे का कालापन खुद इस बात को चीख-चीखकर बता रहा है कि किस प्रकार उनते शव से छेड़छाड़ हुई है मरणोपरांत।

कहां चली गई भीड़

अमित शाह अटल की मौत को एक इवेंट बनाने का खेल इसलिए कर रही थी कि टीवी के सहारे पूरा देश देखे कि कैसे भाजपा के इतने बड़े नेता की मौत पर जनसैलाब उमड़ आया है। लेकिन 17 अगस्त को अंतिम संस्कार के समय न जन थे और न सैलाब। केरल में सैलाब जरूर कहर ढा रहा था लेकिन अटल की अंतिम यात्रा में सैलाब नहीं था। चंद हजार लोग, जो दिल्ली में भाजपा का कैडर है, वही राम नाम सत्य का नारा लगाने की बजाय जयश्रीराम का नारा लगाते हुए चल रहा था। स्मृति स्थल पर सुपर वीआईपी तो थे लेकिन जिस तरह राजीव गांधी, इंदिरा गांधी या अभी हाल ही में करुणानिधि और जयललिता के लिए लोग उमड़े थे, वह जनता नहीं थी यानी लोग अटल के अंतिम दर्शन के लिए आने को तैयार नहीं हुए।

जिनकी दिहाड़ी मारी गई

हर साल 15 अगस्त से एक दिन पहले यानी 14 अगस्त से ही आईटीओ से लेकर लालकिले तक और बीच में दरियागंज और चांदनी चौक में सारी व्यापारिक गतिविधियों को बंद करा दिया जाता है। सारी पार्किंग बंद कर दी जाती है। इस बार रेहड़ी और फुटपाथ पर सामान बेचने वालों के लिए आफत रही। 14-15 अगस्त को बंद रखने की तैयारी आईटीओ, दरियागंज, चांदनी चौक, लालकिला इलाके के छोटे-बड़े दुकानदार ने खुद ही कर ली थी। उन्हें पहले से मालूम था कि दिल्ली पुलिस सुरक्षा के नाम पर सबकुछ बंद करा देती है। लेकिन 16 अगस्त को अटल जब परलोक सिधार गए और उसी दिन अमित शाह एंड कंपनी ने तय किया कि इस मौत को इवेंट बनाना है तो दिल्ली पुलिस से कहा गया वह 17 अगस्त को पूरा अजमेरी गेट इलाका, पूरा आईटीओ और रिंगरोड आदि को बंद कराए, क्योंकि 17 अगस्त को अटल की शोभायात्रा में टीवी पर सबकुछ बंद नजर आना चाहिए। दिल्ली पुलिस ने 16 अगस्त की शाम को ही आकर अपना फरमान सुना दिया कि 17 अगस्त को वे परिंदे को भी पर मारने की इजाजत नहीं देंगे। क्योंकि पीएमओ से कहा गया था कि प्रधानमंत्री चूंकि अंतिम यात्रा में शामिल होंगे, इसलिए सबकुछ बंद रहना चाहिए। लेकिन तब तक दिल्ली पुलिस को भी नहीं बताया गया था कि मोदी और बाकी सारे अर्थी के साथ पैदल चलेंगे। यह बात सिर्फ अमित शाह और मोदी ही जानते थे क्योंकि इसे इवेंट बनाना था। इसका नतीजा यह निकला की 17 अगस्त को शाम 6 बजे तक आईटीओ के प्रेस वाले इलाके में, दरियागंज में, अजमेरी गेट रोड पर लोगों को एक कप चाय भी नसीब नहीं थी। विभिन्न अखबारों और टीवी चैनल के पत्रकारों को पुलिस वालों से मांग कर पानी पीना पड़ रहा था। इन इलाकों में दुकान लगाने वालों को इस तरह तीन दिन का नुकसान हुआ। एक दिहाड़ीदार के लिए तीन दिन की कमाई कम नहीं होती है लेकिन मोदी समर्थक या अमित शाह एंड कंपनी यह सब सुनने को तैयार कहां हैं।

बंट गए वामपंथी

अटल की श्रद्धांजलि को लेकर वामपंथी पूरी तरह बंट गए। जेएनयू के छात्र नेता कन्हैया कुमार और शाहला राशिद ने फेसबुक पर और ट्वीट पर लिखा कि अटल थोड़ा उदारवादी थे और इस बहाने से उन्होंने श्रद्धांजलि दे दी। कई और वामपंथी नेताओं ने यह सब किया। शहला राशिद ने यह भी लिखा कि किस तरह कश्मीरियों में अटल की छवि थोड़ा अच्छी थी।...यह सब जैसे ही सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, लोग इन पर टूट पड़े। लोगों ने गाली देने से लेकर इन्हें अवसरवादी तक बता डाला। छत्तीसगढ़ की सोशल एक्टिविस्ट सुरभि सिंह ने कन्हैया पर तो कुछ नहीं कहा लेकिन शहला पर सीधा अटैक किया और यह तक कहा कि राजनीति में आने को आतुर मुसलमानों का यही हाल है कि वे अवसरवादी बन जाते हैं। इनके बचाव में सोशल मीडिया पर वरिष्ठ पत्रकार सीमा मुस्तफा और यूसुफ किरमानी उतरे और अपने तर्कों से खांटी माओवादियों के तर्कों को काटने की नाकाम कोशिश की। सीमा मुस्तफा और यूसुफ किरमानी का तर्क था कि शाहला राशिद या कन्हैया की आलोचना करने वाले इस देश के मुसलमानों को कैसे पूरी तरह अवसरवादी या राजनीति में आने को आतुर बता सकते हैं। सोशल मीडिया दिन रात एनडीटीवी के एंकर रवीश का गुणगान करने वाली शीबा असलम फहमी भी सुरभि सिंह के समर्थन में दो चार टिप्पणियों के बाद शांत हो गईं लेकिन आमतौर पर सोशल मीडिया पर सक्रिय मुस्लिम टिप्पणीकारों ने इसका विरोध किया। बाद में सुरभि सिंह ने यह कह कर पीछा छुड़ाया कि उन्होंने सारे मुसलमानों को अवसरवादी नहीं बताया है।

हिंदी के जानेमाने लेखक उदय प्रकाश ने अटल की मौत पर हिंदुस्तान टाइम्स के मुख्य शीर्षक में लिखा और इस अंदाज में लिखा कि वह श्रद्धांजलि लगे। यूसुफ किरमानी ने उनसे सवाल दागा कि वह अखबार के हेडिंग की तारीफ कर रहे हैं या फिर उसके बहाने से अटल को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। उदय प्रकाश ने मुड़कर जवाब नहीं दिया। हालांकि उदय प्रकाश ने मोदी के सत्ता में आने के बाद कवि-लेखकों की ओर से पुरस्कार वापसी की शुरुआत की थी। वह खुद को कभी वामपंथी तो कभी समाजवादी झुकाव वाला शख्स बताते हैं लेकिन अखबार के मुख्य शीर्षक को देते हुए उन्होंने आखिरकार अटल को श्रद्धांजलि दे मारी। अभी कई और चेहरे सामने आना बाकी हैं।